

21वीं सदी की हिंदी महिला कहानीकारों की कहानियों में वृद्धावस्था की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थितियों का चित्रण

सुनीता गोपालिया

शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

21वीं सदी के हिंदी कथा-साहित्य में वृद्धावस्था एक महत्वपूर्ण सामाजिक और मानवीय प्रश्न के रूप में उभरती है। भूमंडलीकरण, शहरीकरण, आर्थिक उदारीकरण, एकल परिवारों का विस्तार, प्रवासन, उपभोक्तावादी जीवन-दृष्टि और बदलते पारिवारिक मूल्यों ने वृद्ध व्यक्ति की पारंपरिक सामाजिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया है। भारतीय परिवार-व्यवस्था में कभी अनुभव, परंपरा और निर्णय के केंद्र में रहने वाले वृद्ध आज अनेक परिस्थितियों में भावनात्मक उपेक्षा, अकेलेपन, आर्थिक असुरक्षा, पीढ़ियों के बीच दूरी तथा उपयोगितावादी दृष्टिकोण का सामना करते दिखाई देते हैं। समकालीन हिंदी महिला कहानीकारों ने वृद्धावस्था को केवल शारीरिक दुर्बलता या जीवन की अंतिम अवस्था के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे परिवार, समाज, लैंगिक संबंधों, आर्थिक संरचना और मानवीय गरिमा से जोड़कर प्रस्तुत किया है। मृदुला गर्ग की 'बेंच पर बूढ़े', सूर्यबाला की 'बाऊजी और बंदर', चित्रा मुद्गल की 'गेंद', मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना', कृष्णा अग्निहोत्री की 'मैं जिन्दा हूँ' तथा उर्मिला शिरीष की वृद्ध-विमर्श से संबंधित कहानियों में वृद्ध जीवन की विविध स्थितियाँ सामने आती हैं। इन रचनाओं में वृद्ध पात्र कहीं परिवार के भीतर रहते हुए भी भावनात्मक रूप से अकेले हैं, कहीं वृद्धाश्रम में विस्थापित जीवन जी रहे हैं, तो कहीं अपने ही घर में अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष करते हैं। महिला कहानीकारों की दृष्टि की विशेषता यह है कि वे वृद्धावस्था को करुणा के साथ-साथ सामाजिक आलोचना और आत्मसम्मान के प्रश्न से भी जोड़ती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन्हीं सामाजिक एवं पारिवारिक स्थितियों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: वृद्धावस्था, वृद्ध-विमर्श, हिंदी कहानी, महिला कहानीकार, पारिवारिक संबंध, अकेलापन, पीढ़ी-अंतर, वृद्धाश्रम, सामाजिक उपेक्षा, आत्मसम्मान।

भारतीय सामाजिक संरचना में वृद्ध व्यक्ति की स्थिति परंपरागत रूप से सम्मान, अनुभव और पारिवारिक मार्गदर्शन से जुड़ी रही है। संयुक्त परिवार में वृद्ध माता-पिता परिवार की निरंतरता, परंपरा और सामूहिक स्मृति के प्रतिनिधि माने जाते थे। किंतु आधुनिकता के विकास के साथ पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन आया। रोजगार की बदलती परिस्थितियाँ, महानगरीय जीवन, शिक्षा और पेशागत गतिशीलता, विदेश अथवा दूसरे शहरों में प्रवासन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती आकांक्षा ने पारिवारिक संबंधों के स्वरूप को बदल दिया। परिणामस्वरूप वृद्धावस्था अब केवल जैविक अवस्था नहीं रही, बल्कि सामाजिक संबंधों और पारिवारिक संरचना के परिवर्तन को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है।

समकालीन हिंदी कहानी ने इस परिवर्तन को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। विशेष रूप से महिला कहानीकारों ने वृद्ध पात्रों की स्थिति को संवेदनात्मक और सामाजिक दोनों स्तरों पर देखा है। 21वीं सदी के वृद्ध-विमर्श से संबंधित अध्ययनों में मृदुला गर्ग की 'बेंच पर बूढ़े', सूर्यबाला की 'बाऊजी और बंदर', मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना' तथा कृष्णा अग्निहोत्री की 'मैं जिन्दा हूँ' जैसी कहानियों को वृद्ध जीवन की समस्याओं से संबद्ध माना गया है। इन कहानियों में वृद्ध व्यक्ति को केवल दया के पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया। वह अपने अस्तित्व, स्मृतियों, इच्छाओं और अधिकारों के साथ उपस्थित होता है। इस प्रकार वृद्धावस्था का साहित्यिक चित्रण व्यक्ति और परिवार के बीच बदलते संबंधों का सामाजिक दस्तावेज भी बन जाता है।

शोध के उद्देश्य

1. 21वीं सदी की हिंदी महिला कहानीकारों की कहानियों में वृद्धावस्था की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. वृद्ध व्यक्ति और परिवार के बीच बदलते संबंधों का विश्लेषण करना।

3. वृद्धावस्था में अकेलेपन, उपेक्षा, आर्थिक निर्भरता और पीढ़ीगत संघर्ष की अभिव्यक्ति को रेखांकित करना।
4. वृद्ध पात्रों के आत्मसम्मान और स्वायत्तता के प्रश्न को समझना।
5. महिला कहानीकारों की दृष्टि में वृद्ध-विमर्श की विशिष्ट संवेदनात्मक एवं आलोचनात्मक भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध-पद्धति

इस अध्ययन में मुख्यतः पाठ-विश्लेषण और व्याख्यात्मक आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। 21वीं सदी के संदर्भ में वृद्धावस्था को केंद्र में रखने वाली महिला कहानीकारों की प्रतिनिधि कहानियों को आधार बनाया गया है। उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री तथा कहानी-पाठों के आधार पर सामाजिक और पारिवारिक संदर्भों की पहचान की गई है। अध्ययन का केंद्र वृद्ध व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक संबंध, भावनात्मक जीवन और बदलते मूल्य हैं।

वृद्धावस्था और बदलता पारिवारिक परिवेश

21वीं सदी में परिवार की संरचना में आया परिवर्तन वृद्धावस्था के अनुभव को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। संयुक्त परिवार में वृद्ध व्यक्ति की भूमिका अपेक्षाकृत केंद्रीय थी, जबकि एकल परिवार में उसका सामाजिक और भावनात्मक क्षेत्र सीमित हो सकता है। नई पीढ़ी के लिए आर्थिक स्वतंत्रता, निजी जीवन, पेशागत व्यस्तता और व्यक्तिगत निर्णय अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। इसके कारण माता-पिता और संतानों के बीच भौतिक दूरी के साथ-साथ मानसिक दूरी भी उत्पन्न होती है। समकालीन कहानियों में यह दूरी केवल घर से बाहर रहने के रूप में नहीं दिखाई देती, बल्कि एक ही घर में मौजूद रहते हुए भी भावनात्मक अलगाव के रूप में दिखाई देती है। वृद्ध माता-पिता की आवश्यकताओं को कई बार परिवार की

प्राथमिकताओं में निम्न स्थान मिलता है। इस प्रकार वृद्ध व्यक्ति के लिए 'घर' भौतिक आश्रय तो रह जाता है, लेकिन भावनात्मक आश्रय नहीं रह पाता।

मृदुला गर्ग की 'बेंच पर बूढ़े' वृद्धावस्था के पारिवारिक और सामाजिक यथार्थ की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी 2014 में प्रकाशित 'वो दूसरी' कहानी-संग्रह में शामिल है। आलोचनात्मक सामग्री में इस संग्रह की कहानियों में वृद्धावस्था की पारिवारिक उपेक्षा और पीढ़ियों के संघर्ष को प्रमुख समस्या के रूप में रेखांकित किया गया है। कहानी का नितिन सोलंकी अपने बेटे, बहू और पोते-पोतियों के साथ रहते हुए भी गहरे अकेलेपन का अनुभव करता है। कहानी में सेवानिवृत्ति केवल नौकरी समाप्त होने का अर्थ नहीं रखती; वह वृद्ध व्यक्ति की सामाजिक उपयोगिता के कम हो जाने की मानसिक अनुभूति को भी व्यक्त करती है। कहानी का प्रकाशित पाठ वृद्ध व्यक्ति के घर में मौजूद रहते हुए भी उसके 'घर से निष्कासन' जैसी अनुभूति को रेखांकित करता है। इस स्थिति में वृद्धावस्था की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि व्यक्ति अपने ही परिवार में उपस्थित होकर भी अपने अस्तित्व की सार्थकता खोजता रहता है। नितिन का अकेलापन इसलिए अधिक मार्मिक है क्योंकि वह निराश्रित नहीं है। उसके पास परिवार है, घर है और आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि भी है, फिर भी वह भावनात्मक रूप से अलग-थलग है। यही आधुनिक वृद्धावस्था की विशिष्ट विडंबना है। वृद्ध व्यक्ति के लिए भोजन, आवास और चिकित्सा आवश्यक हैं, लेकिन उतनी ही आवश्यक उसकी बातचीत, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, पारिवारिक सम्मान और भावनात्मक स्वीकृति भी है।

कहानी में भोजन और भाषा जैसे सामान्य घरेलू प्रसंगों के माध्यम से पीढ़ीगत अंतर को व्यक्त किया गया है। नई पीढ़ी की जीवनशैली, खान-पान और भाषा के प्रति वृद्ध की दृष्टि तथा बच्चों की आधुनिक जीवनशैली के बीच अंतर केवल सांस्कृतिक अंतर नहीं है; यह उस दूरी का संकेत है जिसमें वृद्ध व्यक्ति स्वयं को बदलते परिवार के लिए अनुपयुक्त महसूस करने लगता है। इस कहानी का महत्त्व इस बात में है कि वृद्धावस्था को केवल बीमारी या निर्भरता से नहीं जोड़ा गया। लेखक ने यह दिखाया है कि वृद्ध व्यक्ति के पास स्मृति, विचार, अनुभव और स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। जब परिवार इन तत्वों की उपेक्षा करता है, तब वृद्धावस्था का संकट और अधिक गहरा हो जाता है।

सूर्यबाला की 'बाऊजी और बंदर' वृद्ध जीवन की समस्या को व्यंग्यात्मक और मानवीय शैली में प्रस्तुत करती है। कहानी में वृद्ध बाऊजी परिवार के बीच रहते हुए भी उस परिवार की प्राथमिकताओं में पूरी तरह शामिल नहीं दिखाई देते। उनके व्यवहार और बच्चों के साथ उनके संबंधों में एक ओर स्नेह है, तो दूसरी ओर पारिवारिक व्यवस्था में उनके लिए बनी सीमाएँ भी स्पष्ट हैं। कहानी में बाऊजी का बंदरों के साथ सहज संबंध विशेष अर्थ रखता है। वे जिन मनुष्यों के बीच अपेक्षित आत्मीयता नहीं पा पाते, वहाँ प्रकृति और जीव-जंतुओं के बीच एक प्रकार का भावनात्मक संसार निर्मित कर लेते हैं। कहानी का मूल पाठ इस संबंध को हास्य और करुणा के मिश्रण के रूप में विकसित करता है।

सूर्यबाला की दृष्टि में वृद्ध व्यक्ति केवल परिवार पर निर्भर व्यक्ति नहीं है। उसमें देने की क्षमता और स्नेह की शक्ति अभी भी मौजूद है। समस्या यह है कि आधुनिक परिवार कई बार उसकी इस भावनात्मक क्षमता को पहचान नहीं पाता। इसीलिए बाऊजी का बंदरों के प्रति स्नेह प्रतीकात्मक रूप से उस मानवीय रिक्तता को भरता है जो परिवार में उत्पन्न हो चुकी है। इस कहानी में हास्य का प्रयोग वृद्ध जीवन की त्रासदी को कम नहीं करता, बल्कि उसे अधिक प्रभावी बनाता है। व्यंग्य के माध्यम से बाजारवादी और उपभोक्तावादी जीवन-मूल्यों की आलोचना भी सामने आती है। सूर्यबाला की कहानी पर उपलब्ध आलोचनात्मक

सामग्री में भी 'बाऊजी और बंदर' को बदलते बाजारवादी परिवेश और पारिवारिक संबंधों की विडंबनाओं से जोड़ा गया है।

चित्रा मुद्गल की 'गेंद' वृद्धावस्था के प्रश्न को वृद्धाश्रम और पारिवारिक उपेक्षा के संदर्भ में सामने लाती है। कहानी के केंद्र में सचदेवा जी हैं, जो वृद्धाश्रम में रहते हैं। उनके माध्यम से वृद्ध व्यक्ति की उस स्थिति को व्यक्त किया गया है जिसमें संतान से भावनात्मक संबंध बने रहने के बावजूद वास्तविक जीवन में दूरी पैदा हो चुकी है। कहानी में वृद्धाश्रम केवल रहने की जगह नहीं है; वह टूटते पारिवारिक संबंधों का सामाजिक प्रतीक है। वृद्धाश्रम की आवश्यकता स्वयं इस बात का संकेत है कि पारंपरिक पारिवारिक सुरक्षा-व्यवस्था कमजोर हुई है। चित्रा मुद्गल की कहानी में वृद्ध पात्र आर्थिक और शारीरिक समस्याओं के साथ-साथ आत्मीयता की आवश्यकता भी अनुभव करता है। आलोचनात्मक स्रोत 'गेंद' को वृद्धावस्था में अपनों की आवश्यकता और उनके द्वारा उपेक्षित किए जाने की समस्या से जोड़ते हैं।

इस कहानी का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष बच्चे के साथ वृद्ध व्यक्ति का संबंध है। गेंद का प्रसंग दो पीढ़ियों के बीच अप्रत्याशित संपर्क का माध्यम बनता है। यहाँ बच्चा उस भावनात्मक संसार का प्रतिनिधि बनता है जिसकी तलाश वृद्ध व्यक्ति करता है। इस प्रकार कहानी यह संकेत देती है कि पीढ़ियों के बीच संवाद समाप्त नहीं हुआ है; आवश्यकता केवल ऐसे मानवीय अवसरों की है जहाँ संबंध औपचारिकता से मुक्त होकर निर्मित हो सकें।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना' आधुनिक महानगरीय जीवन में वृद्धावस्था की मानसिक और पारिवारिक विडंबना को प्रस्तुत करती है। उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री के अनुसार कहानी में एक सेवानिवृत्त विधुर पिता का जीवन सामने आता है, जिसके बच्चे अलग-अलग स्थानों पर रहते हैं और उसके साथ नियमित आत्मीय संपर्क नहीं बना पाते। यहाँ वृद्धावस्था का संकट केवल पारिवारिक उपेक्षा तक सीमित नहीं है। व्यक्ति की पूर्व सामाजिक पहचान और वर्तमान स्थिति के बीच भी गहरा अंतर दिखाई देता है। जो व्यक्ति कभी ज्ञान, पद और सामाजिक प्रतिष्ठा का केंद्र था, वह वृद्ध होने पर अपने ही जीवन की उपयोगिता पर प्रश्न करने लगता है।

इस कहानी के माध्यम से महानगरीय जीवन की एक गंभीर समस्या सामने आती है—भौतिक निकटता और भावनात्मक दूरी। आधुनिक संचार साधन उपलब्ध होने के बावजूद परिवार के सदस्यों के बीच आत्मीय संवाद कम हो सकता है। वृद्ध व्यक्ति के लिए समय देना, उसकी बात सुनना और उसके अनुभव को स्वीकार करना आर्थिक सहायता से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

वृद्ध स्त्री की विशिष्ट समस्या

वृद्ध-विमर्श में महिला वृद्ध पात्रों की स्थिति विशेष ध्यान की अपेक्षा करती है, क्योंकि वृद्ध स्त्री की समस्याएँ उम्र के साथ-साथ लैंगिक असमानता से भी जुड़ जाती हैं। वृद्धावस्था का अनुभव स्त्री और पुरुष के लिए समान नहीं होता। वृद्ध पुरुष प्रायः सेवानिवृत्ति के बाद सामाजिक भूमिका के संकट से गुजरता है, जबकि वृद्ध स्त्री को उम्र, विधवापन, घरेलू श्रम की अदृश्यता और आर्थिक निर्भरता जैसी अतिरिक्त समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

कृष्णा अग्निहोत्री की 'मैं जिन्दा हूँ' इस संदर्भ में उल्लेखनीय कहानी है। कहानी की वृद्धा राग अपने ही परिवार में अपमान और उपेक्षा का सामना करती है, लेकिन अंततः अपनी पहचान और अधिकार के लिए आवाज उठाती है। उपलब्ध पाठ में राग की आर्थिक स्वतंत्रता, पेंशन, निजी कमरे और व्यक्तिगत गरिमा के प्रश्न स्पष्ट रूप से सामने आते हैं। इस कहानी की विशेषता यह है कि वृद्ध स्त्री को निष्क्रिय पीड़िता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया। राग अपनी परिस्थितियों को पहचानती है और परिवार के सामने अपने अधिकारों का प्रश्न उठाती है। वह यह स्वीकार

करने को तैयार नहीं कि वृद्ध होना स्वयं में किसी व्यक्ति को दूसरों की दया पर निर्भर बना देता है। इस दृष्टि से कहानी वृद्ध-विमर्श को स्त्री-विमर्श से जोड़ती है। वृद्ध स्त्री की स्वतंत्रता, आर्थिक अधिकार, निजी स्थान और निर्णय लेने की क्षमता सामाजिक सम्मान के मूल घटक बन जाते हैं। कहानी यह स्पष्ट करती है कि वृद्धावस्था में गरिमा की रक्षा के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। मृदुला गर्ग की रचनाओं में घरेलू श्रम और वृद्ध स्त्री की स्थिति का संबंध दिखाई देता है। 'बेंच पर बूढ़े' में भागवती के जीवन को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि परिवार में स्त्री की भूमिका अक्सर उसकी सेवा-क्षमता से निर्धारित की जाती है। उर्मिला शिरीष की कहानियों में भी वृद्धावस्था से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है। आलोचनात्मक अध्ययनों में उनकी 'वानप्रस्थ', 'निर्वासन', 'हैसियत', 'पत्ते', 'राग विराग', 'धरोहर', 'प्रतीक्षा' आदि कहानियों को वृद्ध-विमर्श से जोड़ा गया है। इनमें वृद्धों के प्रति बहू-बेटों की उपेक्षा, घर से विस्थापन, संपत्ति पर अधिकार का संघर्ष और पारिवारिक असम्मान जैसे प्रसंग सामने आते हैं। यहाँ वृद्धावस्था का संकट केवल व्यक्तिगत नहीं है। संपत्ति, उत्तराधिकार और परिवार की आर्थिक संरचना भी वृद्ध व्यक्ति की स्थिति को प्रभावित करती है। वृद्ध माता-पिता जब तक आर्थिक रूप से उपयोगी या संपत्ति के स्वामी हैं, तब तक परिवार में उनकी स्थिति एक प्रकार की शक्ति से जुड़ी रह सकती है; लेकिन आर्थिक उपयोगिता समाप्त होते ही संबंधों की वास्तविकता सामने आ सकती है। उर्मिला शिरीष की कहानियों में इस स्थिति का समाधान केवल भावुकता में नहीं खोजा गया। पारिवारिक सद्भाव, परस्पर सम्मान और मानवीय संवेदना को सामाजिक जीवन की आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार महिला कहानीकारों के यहाँ वृद्ध स्त्री केवल 'माँ' या 'दादी' की भूमिका में सीमित नहीं रहती। वह अपने व्यक्तित्व, इच्छा और अधिकार के साथ एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उपस्थित होती है।

वृद्धावस्था और पीढ़ीगत-अंतर

21वीं सदी के हिंदी महिला कथा-साहित्य में वृद्धावस्था की एक प्रमुख समस्या पीढ़ियों के बीच बढ़ता हुआ अंतर है। यह अंतर केवल उम्र का अंतर नहीं है। यह जीवन-मूल्यों, भाषा, तकनीक, खान-पान, परिवार की अवधारणा, आर्थिक प्राथमिकताओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति दृष्टिकोण का अंतर भी है। मृदुला गर्ग की 'बेंच पर बूढ़े' में यह अंतर भाषा और जीवनशैली के माध्यम से दिखाई देता है। सूर्यबाला की 'बाऊजी और बंदर' में पारिवारिक जीवन और आधुनिक उपभोक्तावाद के बीच तनाव सामने आता है। चित्रा मुद्गल की 'गेंद' में वृद्धाश्रम नई पीढ़ी और वृद्ध व्यक्ति के बीच टूटते संबंधों का परिणाम बनता है। इस प्रकार अलग-अलग कहानियाँ एक ही सामाजिक परिवर्तन को अलग-अलग कोणों से देखती हैं।

पीढ़ीगत-अंतर का एक महत्वपूर्ण परिणाम वृद्ध व्यक्ति का सांस्कृतिक विस्थापन है। नई पीढ़ी के लिए जिन आदतों, परंपराओं और जीवन-मूल्यों का महत्व कम हो चुका है, वे वृद्ध पीढ़ी के जीवन का अभिन्न हिस्सा होते हैं। इससे परिवार में संवाद का संकट पैदा होता है।

वृद्धावस्था और आर्थिक असुरक्षा

वृद्धावस्था में आर्थिक स्थिति सामाजिक सम्मान और पारिवारिक स्वतंत्रता को सीधे प्रभावित करती है। सेवानिवृत्ति के बाद नियमित आय में कमी, चिकित्सा संबंधी खर्च और दूसरों पर आर्थिक निर्भरता वृद्ध व्यक्ति की स्थिति को कमजोर कर सकती है। 'मैं जिन्दा हूँ' कहानी में पेंशन के प्रश्न के माध्यम से वृद्ध स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता को उसकी गरिमा से जोड़ा गया है।

वहीं 'बेंच पर बूढ़े' कहानी में सेवानिवृत्ति के बाद व्यक्ति की सामाजिक भूमिका बदलने की समस्या सामने आती है। इस प्रकार कहानियाँ यह स्थापित करती हैं कि वृद्धावस्था को समझने के लिए आर्थिक संरचना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। आर्थिक निर्भरता कई बार पारिवारिक निर्भरता को भी जन्म देती है। यदि वृद्ध व्यक्ति के पास अपनी आय, संपत्ति या निर्णय की स्वतंत्रता नहीं है, तो वह पारिवारिक सत्ता-संबंधों में कमजोर स्थिति में पहुँच सकता है। महिला कहानीकारों ने इस वास्तविकता को भावनात्मक स्तर के साथ-साथ सामाजिक स्तर पर भी रेखांकित किया है।

अकेलापन: वृद्धावस्था की सबसे बड़ी सामाजिक त्रासदी

वृद्धावस्था के साहित्यिक चित्रण में अकेलापन सबसे व्यापक अनुभव के रूप में उभरता है। यह अकेलापन दो प्रकार का है—भौतिक और भावनात्मक। वृद्धाश्रम में रहने वाला व्यक्ति भौतिक रूप से परिवार से अलग हो सकता है, जबकि परिवार के साथ रहने वाला व्यक्ति भावनात्मक रूप से अकेला हो सकता है। 'बेंच पर बूढ़े' में नितिन का अकेलापन इसी दूसरे प्रकार का है। 'गेंद' में वृद्धाश्रम सामाजिक विस्थापन का प्रतीक बनता है। 'प्रेतकामना' में महानगरीय जीवन वृद्ध व्यक्ति को परिवार के रहते हुए भी एकाकी बनाता है। 'बाऊजी और बंदर' में प्रकृति और जीव-जंतुओं के साथ संबंध वृद्ध व्यक्ति की भावनात्मक आवश्यकता की पूर्ति का वैकल्पिक माध्यम बनता है। इस प्रकार महिला कहानीकारों के लिए वृद्धावस्था का अकेलापन निजी दुर्भाग्य नहीं, बल्कि आधुनिक सामाजिक संरचना की आलोचना है।

वृद्ध-विमर्श में महिला कहानीकारों की दृष्टि

महिला कहानीकारों की विशेषता यह है कि वे वृद्धावस्था को केवल वृद्ध व्यक्ति के दृष्टिकोण से नहीं देखतीं, बल्कि परिवार की संरचना और भावनात्मक संबंधों की जटिलता को भी सामने लाती हैं। उनके यहाँ वृद्ध व्यक्ति कभी पिता है, कभी माँ, कभी दादा-दादी और कभी सेवानिवृत्त नागरिक। प्रत्येक भूमिका के साथ उसकी सामाजिक अपेक्षाएँ बदलती हैं। इन कहानियों में करुणा के साथ प्रतिरोध भी है। वृद्ध पात्रों को केवल संरक्षण की आवश्यकता वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनकी स्वायत्तता और निर्णय क्षमता को स्वीकार किया गया है। यही समकालीन वृद्ध-विमर्श को पुराने आदर्शवादी वृद्ध-चित्रण से अलग करता है। 21वीं सदी का वृद्ध पात्र परंपरा का निष्क्रिय प्रतिनिधि नहीं है। वह बदलती दुनिया को समझने का प्रयास करता है, कभी उसका विरोध करता है, कभी उसके साथ समझौता करता है और कभी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है। इसीलिए समकालीन महिला कहानीकारों की वृद्ध-केंद्रित कहानियाँ सामाजिक परिवर्तन की आलोचनात्मक व्याख्या भी प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष

21वीं सदी की हिंदी महिला कहानीकारों की कहानियों में वृद्धावस्था का चित्रण बहुआयामी है। यहाँ वृद्ध व्यक्ति की समस्या केवल शारीरिक कमजोरी या बीमारी नहीं है। उसके पीछे परिवार की बदलती संरचना, आर्थिक असुरक्षा, पीढ़ी-अंतर, शहरीकरण, उपभोक्तावाद, प्रवासन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की नई अवधारणाएँ सक्रिय हैं। मृदुला गर्ग की 'बेंच पर बूढ़े' परिवार के भीतर मौजूद अकेलेपन और उपयोगितावादी दृष्टि को उजागर करती है। सूर्यबाला की 'बाऊजी और बंदर' वृद्ध व्यक्ति के भावनात्मक विस्थापन को व्यंग्यात्मक रूप में सामने लाती है। चित्रा मुद्गल की 'गेंद' वृद्धाश्रम और टूटते पारिवारिक संबंधों के माध्यम से वृद्धावस्था की सामाजिक समस्या को रेखांकित करती

है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना' महानगरीय जीवन में वृद्ध व्यक्ति की भावनात्मक रिक्तता को सामने लाती है। कृष्णा अग्निहोत्री की 'मैं जिन्दा हूँ' वृद्ध स्त्री के आत्मसम्मान, आर्थिक अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को केंद्रीय प्रश्न बनाती है। उर्मिला शिरीष की कहानियाँ भी वृद्धों के पारिवारिक विस्थापन, संपत्ति-संबंधी तनाव और सम्मान के संकट को रेखांकित करती हैं। इन रचनाओं का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वृद्धावस्था का संकट मूलतः संबंधों के संकट से जुड़ा है। वृद्ध व्यक्ति को केवल आर्थिक सहायता या चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है; उसे परिवार के सक्रिय और सम्मानित सदस्य के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। उसके अनुभव, स्मृति, भावनाओं और निर्णय की स्वतंत्रता को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए। समकालीन हिंदी महिला कहानीकारों का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने वृद्धावस्था को करुणा के सीमित घेरे से निकालकर सामाजिक न्याय, पारिवारिक नैतिकता और मानवीय गरिमा के प्रश्न से जोड़ दिया है। उनकी कहानियाँ समाज से यह प्रश्न करती हैं कि जिन लोगों ने परिवार और समाज के निर्माण में अपना जीवन लगाया, वृद्ध होने पर उनके प्रति समाज की जिम्मेदारी क्या है। इस दृष्टि से वृद्ध-विमर्श केवल बुजुर्गों की समस्याओं का साहित्यिक चित्रण नहीं, बल्कि बदलते भारतीय समाज की संवेदनात्मक और नैतिक परीक्षा भी है।

संदर्भ-सूची

1. गर्ग, मृदुला, बेंच पर बूढ़े, वो दूसरी, राजकमल प्रकाशन, 2014
2. गर्ग, मृदुला, वो दूसरी, राजकमल प्रकाशन, 2014
3. प्रेमचंद, बूढ़ी काकी, मानसरोवर, खंड 1, हंस प्रकाशन, 1936
4. प्रियंवदा, उषा, वापसी, जिंदगी और गुलाब के फूल, राजकमल प्रकाशन, 1964
5. सूर्यबाला, बाऊजी और बंदर, हिंदी समय, 2016
6. कुमारी, कोमल, सूर्यबाला की कहानी में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन का द्वंद्व: समस्याएँ और समाधान, शोध संगम पत्रिका, 2025
7. सी, श्रीमाया, वापसी कहानी में चित्रित वृद्ध विमर्श, शोध उत्कर्ष, 2025
8. कुमारी, प्रियांशु, और सरिता, प्रेमचंद के साहित्य में वृद्ध विमर्श, शोध उत्कर्ष, 2024